BA part II (Sub/GEN)

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
VSJ college Rajnagar

Lecture VII

वृद्धजनों के लिए सुझाव :- वृद्धजनों के पास अनुभव की अपार पूंजी होती है किन्तु हमने उन्हें अनुपयोगी समझकर सामाजिक पूंजी से पृथक कर दिया गया है। यदि हम अपने भविष्य को संवारना चाहते हैं तो हमें वृद्धजनों के प्रति संवेदनशील बनना ही होगा। युवा पीढ़ी की यह सोच की बढ़ती आयु के साथ वृद्धजन - सामर्थहीन हो जाते है, एक गलत अवधारणा है। वृद्धावस्था का सामर्थ्य अतिशीघ्र होता है। अनुभव और धैर्य से ओतप्रोत वृद्धावस्था किसी भी राष्ट्र के लिये हितकारी सिद्ध हो सकती है। अतः हमें वृद्धावस्था का सम्मान करने और उसका सदुपयोग करने की आवश्यकता है। इस दिशा में कुछ सुझाव इस प्रकार है -

1. भारत के लोग अपने बच्चों का भविष्य बनाने पर तो ध्यान दे, किन्तु इतनी बचत और सामर्थ्य बचा कर रखे कि वृद्धावस्था में अपना भरण-पोषण स्वयं कर सके -

2. हमारे युवा वर्ग को भी इस बात का स्मरण रखनी होगी कि हमारे माता-पिता का विश्वास उसीर साथ ठीक उसी प्रकार से जुड़ा है, जिस प्रकार से हमारा विश्वास हमारे बच्चों से जुड़ा हुआ है।

3. देश में पर्याप्त मात्रा में वृद्धाश्रम खोले जाये ताकि उपेक्षित वृद्ध ससम्मान अपना जीवन इन वृद्धाश्रमों में व्यतीत कर सकें।

4. केन्द्र सरकार, राज्य सरकारों तथा गैर सरकारी संगठनों के सहयोग से व्यापक स्तर पर ऐसे लघु एवं कुटीर उद्योग प्रारम्भ करे, जिनमें वृद्ध कार्य कर सके। इससे न केवल वृद्धजनों का शरीर-स्वस्थ रहेगा, बल्कि वे घर के कमाऊ सदस्य भी बने रहेंगे।

5. यदि कोई संतान अपने माता-पिता पर अत्याचार करती है तो ऐसे माता पिता को मैंटेनेंस एंड वेलफेयर आफ पेरेंट्स एंड सीनियर सिटीजंस विधेयक 2007 का प्रयोग करते हुए अपनी सन्तान पर कड़ी कार्यवाही करनी चाहिये।

यदि इन सुझावों को ध्यान में रखा जाए तथा उसका क्रियान्वयन किया जाए तो वृद्धजनों की अनेक समस्याओं को हल किया जा सकता है।